एड्स

प्रसार के रास्तों का विवाद

एड्स सम्बंधी कोई भी शिक्षाप्रद विज्ञापन देखें तो आपको पता चला जाता है कि यह खतरनाक बीमारी असुरक्षित यौन सम्बंधों, असुरक्षित सिरिंज से इंजेक्शन लगाने, एड्स ग्रस्त व्यक्ति का खून लेने और एड्स ग्रस्त मां के दूध से बच्चे को मिल सकती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि एड्स के प्रसार में इनमें से किस तरीके का कितना योगदान है?

आम तौर पर चिकित्सा जगत में माना जाता है कि अफ्रीका में एड्स फैलने का प्रमुख कारण असुरक्षित यौन सम्बंध है। माना जाता है कि एड्स के कुल मामलों में से 90 फीसदी इसी रास्ते पैदा हुए हैं। असुरक्षित सिरिंज से 5 फीसदी और शेष रास्तों से और 5 फीसदी प्रसार हुआ है।

मगर हाल ही में एक अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान दल ने उजागर किया है कि ये मान्यताएं गलत हैं। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एसटीडी एण्ड एड्स में प्रकाशित अपने शोध पत्रों में इस दल ने एड्स प्रसार सम्बंधी आंकड़ों का फिर से विश्लेषण करके बताया है कि असुरक्षित यौन सम्बंध एड्स के मात्र एक-तिहाई मामलों के लिए ज़िम्मेदार है। दूसरी ओर असुरक्षित सिरिंज का उपयोग आधे से ज़्यादा एड्स मामलों की जड़ में है। दल का कहना है कि पाश्चात्य वैज्ञानिकों के मन में अफ्रीका के लोगों की यौन-स्वच्छंदता को लेकर जो धारणाएं हैं उन्हीं के चलते असुरक्षित यौन सम्बंधों को एड्स के संदर्भ में इतना ज़्यादा महत्व मिला है, अन्यथा मुख्य दोषी तो असुरक्षित सिरिंज है।

सवाल यह उठता है कि इनमें से किस मत को माना जाए। और यह सिर्फ अकादमिक बहस का सवाल नहीं है। इसके जवाब से तय होगा कि एड्स के मामले में हस्तक्षेप की रणनीतियां क्या हों। आज तक असुरक्षित यौन सम्बंधों को प्रमुख अपराधी मानकर कण्डोम आधारित रणनीति का बोलबाला रहा है। हो सकता है कि असुरक्षित यौन सम्बंध एक बड़ा कारण हों मगर सिरिंज की नोक को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। सवाल यह भी है कि इन विवादास्पद निष्कर्षों के चलते एक आम इंसान क्या करे। क्या वह कण्डोम की सुरक्षा से संतुष्ट रहे या इंजेक्शन लगवाना भी बंद कर दे? इस सिलसिले में कुछ और तथ्य भी गौरतलब हैं।

एड्स प्रसार में सिरिंज का योगदान चाहे 5 फीसदी हो या 50 मगर एक बात स्पष्ट है कि यह आंकड़ा काफी बड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि प्रतिवर्ष लगभग 7.5 अरब इंजेक्शन गंदी सिरिंज से लगाए जाते हैं - कई बार तो इन्हें धोया तक नहीं जाता या मात्र गुनगुने पानी में डुबाकर निकाल लिया जाता है। बताया जाता है कि हिपेटाइटिस बी के एक-तिहाई मामले यानी साल में तकरीबन 2 करोड़ लोग इसी तरह से रोग ग्रस्त हुए हैं। अफ्रीका व एशिया के देशों में आधे से ज़्यादा इंजेक्शन इस विधि से लगाए जाते हैं। तो एड्स की स्थिति जिस भी वजह से हो मगर सुरक्षित इंजेक्शन अन्य कारणों से भी ज़रूरी है।

हमारे यहां ज़रूरत से ज़्यादा इंजेक्शन देने का भी चलन है। मरीज़ तो मरीज़, डॉक्टर भी इस बात के कायल हैं कि इंजेक्शन ज़्यादा असरदार इलाज है। इसलिए जहां गोली से काम चल सकता है वहां भी इंजेक्शन ठोंके जाते हैं। इसका प्रमुख जवाब तो शिक्षा में है। टेक्नॉलॉजी भी आंशिक रूप से मददगार हो सकती है। मसलन अब ऐसी सिरिंज बनाई गई है जो एक बार इंजेक्शन देने के बाद काम ही नहीं करेगी - उसका पिस्टन अन्दर जाकर चिपक जाएगा। मगर इनका उपयोग तो मात्र सरकारी टीकाकरण कार्यक्रमों में ही हो पाएगा। शेष जगह तो वही चलेगा - डिस्पोज़ेबल सिरिंज का बारम्बार इस्तेमाल। इस मामले में हस्तक्षेप निहायत ज़रूरी है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***